दैनिक जागरण

आत्मविश्वास सफलता की पहली सीढ़ी है

अब चुप होकर नहीं बैठेगा भारत

अमित शाह

26 फरवरी की सुबह दुनिया ने नए भारत की एक नई तस्वीर देखी। एक ऐसा भारत जो शांति का अग्रदूत है, लेकिन अपनी रक्षा के लिए सजग भी। स्पष्ट है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश सुरक्षित हाथों में है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ वर्ष पहले देश की जनता से वादा किया था कि, 'मैं देश नहीं झुकने दूंगा, मैं देश नहीं मिटने दूंगा।' उन्होंने अपने इस वादे को हाल में राजस्थान के चुरू में फिर दोहराते हुए जनता को आश्वस्त किया कि देश सुरक्षित हाथों में है। कुछ समय से देश में यह धारणा विकसित होती गई कि चुनाव में नेता जो वादा करते हैं, बाद में उससे मुकरने लगते हैं। यह धारणा क्यों बनी, उस चर्चा आवश्यक नहीं, किंतु यह जरूर है कि नरेंद्र मोदी ने इस धारणा को तोड़ा है। पांच साल पहले उन्होंने जनता से जो वादे किए थे, आज उन पर अमल के साथ जनता से संवाद कर रहे हैं। उन्होंने वादा किया था देश नहीं झुकने देंगे तो इसे साबित करने पर ही वह इसे जनता के बीच दोहरा पा रहे हैं। सभी जानते हैं कि आतंकवाद आज दुनिया के लिए एक चुनौती है। भारत के सामने भी आतंकवाद को समाप्त करने की चुनौती बनी हुई है। यह लड़ाई दो स्तरों पर लड़नी है। एक वैश्विक आतंकवाद को समाप्त करने की और दूसरी सीमापार से भारत को नुकसान पहुंचाने वाले आतंक से निपटने की। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में दोनों स्तरों पर भारत ने मजबूती के साथ अपनी 'जीरो टोलरेंस' की नीति स्पष्ट की है। मोदी सरकार ने सत्ता संभालते ही इसे स्पष्ट कर दिया था। सीमापार से संचालित आतंकी गतिविधियों के खिलाफ यही हमारी नीति भी है और नीयत भी।

देश में आतंकवाद मुख्य रूप से कश्मीर घाटी तक सीमित रहा है। कश्मीर संकट के लिए भी पिछली सरकारों की तीन भूलें मूल वजह के रूप में सामने आती हैं। पहली भूल 1947 की है जब सेना आगे बढ़ रही थी तो तत्कालीन सरकार ने उसे रोक दिया था। दूसरी भूल भी तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा इसे संयुक्त राष्ट्र में ले जाना थी। तीसरी भूल कांग्रेस सरकारों के दौरान तुष्टीकरण की राजनीति रही। इन ऐतिहासिक कारणों से कश्मीर की समस्या आज तक कायम है और कुछ नकारात्मक ताकतें इनका फायदा उठाकर मुगालते में हैं कि वे आतंक के सहारे कश्मीर को हथिया लेंगी। वे इस गलतफहमी को जितना जल्दी दूर कर लें, उनके लिए उतना बेहतर होगा। मोदी सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ जो लगातार मजबूत कदम उठाए हैं उससे स्पष्ट है कि कोई आतंक के बूते कश्मीर का एक इंच हिस्सा इधर से उधर करने की सोच भी नहीं सकता है।

गत 14 फरवरी को पुलवामा में सीआरपीएफ जवानों पर आतंकियों ने छलपूर्वक हमले का जो कुकृत्य किया, वह हम सभी के लिए असहनीय था। हमारे 44 जवानों की शहादत से मन उद्वेलित हो गया। शहादत की पीड़ा और गुस्से का भाव देश के आम जनमानस में था। यह जनता का अपनी सेना और चुनी हुई मोदी सरकार पर भरोसा था कि उन्होंने इस कठिन परिस्थिति में भी संयम रखा। यह भी एक बदलाव है कि देश अब कठिन से कठिन परिस्थिति में भी निराश और हताश नहीं होता, बल्कि बेहतरी की आस रखता है। पुलवामा मामले के बाद भी यह दिखा। पुलवामा हमले के एक दिन बाद ही प्रधानमंत्री मोदी ने देश की जनता को आश्वस्त किया कि इसे अंजाम देने वाले भले ही किसी कोने में छिपे हों, उनका बचना नामुमकिन है। वह जब यह कह रहे थे तो उन्हें केवल देश की जनता ही नहीं, बल्कि दुनिया भी देख रही थी। यह बदलते भारत का स्वर था। उनकी कथनी में भारत के मजबूत आत्मविश्वास और निर्णायक रक्षानीति की स्पष्ट ध्वनि थी। इसके दम पर ही हमारी वायु सेना ने पाकिस्तान में घुसकर जैश-ए-मुहम्मद के तीन बड़े आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। आजादी के बाद भारतीय वायु सेना ने पहली बार दुश्मन देश के घर में घुसकर उसे नेस्तनाबूत किया। पाकिस्तान में भारत के हवाई हमले के बाद हमारे शहीद जवानों के परिवारों को जरूर सुकून मिला होगा। हम अपने वीर जवानों के प्रति संवेदनशील भी हैं और उनकी पीड़ा में सहभागी भी हैं।

अवधेश राजपूत

26 फरवरी की सुबह दुनिया ने नए भारत की एक नई तस्वीर देखी। एक ऐसा भारत जो शांति का अग्रदूत है, लेकिन अपनी रक्षा के लिए सजग भी है। एक ऐसा भारत जो आतंकवाद के खिलाफ जंग में दुनिया का नेतृत्व करने की क्षमता से संपन्न है तो अपनी सीमा के भीतर होने वाली किसी भी आतंकी गतिविधि का मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम भी। वहीं एक दौर था जब देश में आतंकी हमले हुआ करते थे। मुंबई, दिल्ली सहित देश के अन्य शहरों में आतंकियों द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर बम विस्फोट की खबरें आती थीं। आतंकवाद को रोकने के लिए नीति और निर्णय में स्पष्टता नहीं थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण था, किंतु मैं यहां उल्लेख करना चाहूंगा कि जब मुंबई में 26/11 का आतंकी हमला हुआ तब उसका करारा जवाब देने की तैयारी हमारी सेना कर चुकी थी, लेकिन तत्कालीन सरकार की कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति और आतंकवाद के खिलाफ ढुलमुल रवैये से वह संभव नहीं हो सका। सेना की पूर्ण तैयारी के बावजूद एक महीने तक अनिर्णय से आतंकियों को जवाब नहीं दिया जा सका। अगर तभी ऐसा कर दिया होता तो शायद आतंकियों के हौसले इतने बुलंद नहीं होते।

केंद्र में मोदी सरकार बनने के बाद स्थितियां बदली हैं। आतंकियों के लिए संचालन दूभर हो गया। सीमावर्ती क्षेत्रों को छोड़ दें तो सरकार के पांच वर्षों में कोई आतंकी घटना नहीं हुई। सीमा पर भी हमें छेड़ा गया तो हमने भी छोड़ा नहीं। उड़ी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक को देश भूला नहीं है। तब लंदन में एक कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा था कि पाक पोषित आतंकवाद का समाधान एक सर्जिकल स्ट्राइक से संभव नहीं। यह लंबी लड़ाई है। आज भारत उस लंबी लड़ाई को लड़ने के लिए तैयार है। आत्मरक्षा और सीमापार से हो रहे आतंकवाद से निपटने के लिए हम अब किसी महाशक्ति के भी मोहताज नहीं रहे। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नया भारत स्वयं अपनी रक्षा तथा आतंकवाद से मुक्ति की जंग का नेतृत्वकर्ता बनने की स्थिति में है। यही कारण है कि पुलवामा हमले के बाद दुनिया के तमाम देशों से भारत को समर्थन मिला।

प्रधानमंत्री मोदी आज अगर दुनिया में भारत की ताकत का अहसास करा पा रहे हैं तो इसके पीछे सवा सौ करोड़ देशवासियों की ताकत काम कर रही है। इसीलिए दुनिया के तमाम देश भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को मान रहे हैं। यह भारत की बड़ी कूटनीतिक सफलता है। इसी कूटनीतिक दबाव का असर है कि आज पाकिस्तान की कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है। भारत ने प्रत्येक मोर्चे पर पाकिस्तान को परास्त किया है। आज वह अलग-थलग पड़ा है।

यह सच है कि आज देश उम्मीदों की उमंग में जी रहा है। पांच साल पहले का निराशा-हताशा वाला दौर अब गया गुजरा हो गया है। देश को लगा है कि बहुत कुछ बदल गया है और आगे हालात और भी बेहतर होंगे, क्योंकि उसे भरोसा है कि 'मोदी हैं तो मुमकिन है।' बीते पांच वर्षों में बहुआयामी विकास के दम पर देश नई ऊंचाई की ओर अग्रसर है। बदलते नए भारत में आतंकवाद जैसी रुकावटें बाधा नहीं बन सकतीं, क्योंकि हमारी नीयत साफ, नीति स्पष्ट और निर्णय में कोई भ्रम नहीं है।

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

पाकिस्तान का दुस्साहस

पाकिस्तान आसानी से सुधरने वाला नहीं, इसका पता उसकी उन हरकतों से चल रहा है जो वह भारतीय सीमा पर सैन्य दुस्साहस के रूप में अपनी खिसियाहट मिटाने के लिए कर रहा है। इसकी आशंका थी कि भारतीय वायुसेना की ओर से बालाकोट में किए गए गए हवाई हमले के बाद बौखलाया पाकिस्तान ऐसी हरकतें करेगा। इन हरकतों का जवाब पूरी दृढ़ता और निर्ममता से दिया जाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। भारत ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि वह युद्ध नहीं चाहता। आगे भी उसकी यही चाहत रहनी चाहिए, लेकिन अगर पाकिस्तान हद लांघता है तो भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसे उसकी भारी कीमत चुकानी पड़े। पाकिस्तान की हरकतों से यह साफ है कि वह जरूरी सबक सीखने को तैयार नहीं। वह बालाकोट हमले का जवाब देने की कोशिश इसीलिए कर रहा है ताकि अपना चेहरा बचाने के साथ अपनी गलतियों पर पर्दा डाल सके। उसकी ऐसी ही एक कोशिश को नाकाम किया गया और उसके एक विमान को मार भी गिराया गया, लेकिन इस दौरान भारतीय वायुसेना का भी एक विमान क्षतिग्रस्त हुआ और उसके पायलट को जख्मी हालत में पाकिस्तान में उतरना पड़ा। दुर्भाग्य से वहां उसे बंधक बना लिया गया। सैन्य संघर्ष में ऐसे हादसे होते हैं और कभी-कभी आघात भी सहने पड़ते हैं। इनसे हमें विचलित नहीं होना चाहिए और न ही अपने लक्ष्य को ओझल होने देना चाहिए।

हमें अपने पायलट की सही-सलामत वापसी की चिंता के साथ अपने इस लक्ष्य से डिगना नहीं कि पाकिस्तान पर तब तक दबाव बनाए रखना है जब तक वह आतंकियों को पालने से तौबा नहीं करता। इसके लिए हर संभव उपाय किए जाने चाहिए और उसके किसी झांसे में नहीं आना चाहिए-ठीक वैसे ही जैसे बालाकोट में हमला करते समय परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की उसकी धौंस की अनदेखी कर दी गई। ऐसा पहले कभी नहीं किया गया। आज जितनी जरूरत पाकिस्तान के सैन्य दुस्साहस से सावधान रहने और उसे करारा जवाब देने की है उतनी ही उसके छल-प्रपंच से सतर्क रहने की भी। इसके प्रति तो हर देशवासी को सजग रहना होगा कि देश में शांति और सद्भाव बना रहे। इससे ही सेनाओं को हर चुनौती का सामना करने का संबल और साहस मिलेगा। पाकिस्तान के साथ दुनिया को यह संदेश जाना ही चाहिए कि आज का भारत नए मिजाज का भारत है। इस बदले हुए मिजाज का परिचय देने में राजनीतिक नेतृत्व की महती भूमिका है। इस भूमिका के निर्वाह के लिए केवल राजनीतिक परिपक्वता का ही प्रदर्शन नहीं होना चाहिए, बल्कि सेना की जरूरतों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने की तत्परता भी दिखाई जानी चाहिए। यह खेद की बात है कि अतीत में यह जानते हुए भी ऐसा नहीं किया गया कि हमारी सेनाएं आधुनिकीकरण की दौड़ में पिछड़ रही हैं। यह समय गलतियों का हिसाब करने का नहीं, बल्कि सही सबक सीखने का है। यह ठीक नहीं कि जब देश युद्ध जैसे हालात से दो-चार है तब वायुसेना को निर्णायक मजबूती देने वाले राफेल विमानों का सौदा अदालत में है। यह बुरी राजनीति का ही एक नमूना है। ऐसी राजनीति राष्ट्र हित में बाधक है।

रोजगार के द्वार

पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में औद्योगिक विस्तार सीमित क्षेत्र में हुआ है। इस कारण निजी क्षेत्र में भी रोजगार के बहुत कम अवसर मिल पा रहे थे। राज्य में इस समय बेरोजगारों का आंकड़ा करीब नौ लाख तक पहुंच गया है। स्वरोजगार के साधन भी यहां पर सीमित हैं। इस कारण राज्य में बेरोजगारी की समस्या गंभीर होती जा रही है। सरकार ने सरकारी क्षेत्र में भी नौकरियों के द्वार खोले हैं, लेकिन यह संभव नहीं है कि सभी को सरकारी नौकरी मिल सके। अब राज्य सरकार ने औद्योगिक घरानों को प्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित किया है। शिमला में 159 कंपनियों ने सरकार के साथ समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। इसमें 17356 करोड़ रुपये का निवेश होगा और 40911 लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा। अप्रत्यक्ष रूप से भी हजारों लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। निःसंदेह यह प्रदेश के युवाओं के लिए किसी सौगात से कम नहीं है। युवाओं को प्रदेश में ही रोजगार के अवसर मिलेंगे। जब राज्य सरकार उद्योगों को सुविधाएं उपलब्ध करवाएगी तो संभव है कि और औद्योगिक घराने भी प्रदेश में निवेश करेंगे। अभी तक प्रदेश के युवा राज्य में रोजगार न मिलने के कारण अन्य राज्यों में पलायन कर रहे थे। वहां पर उन्हें कई तरह की समस्याओं से जूझना पड़ता था। अब घर के पास ही रोजगार के अवसर मिलने से उन्हें काफी राहत मिलेगी। अभी तक अधिकतर उद्योग कुछ क्षेत्रों में ही स्थापित होते रहे हैं। सरकार को चाहिए कि पूरे प्रदेश और विशेषकर राज्य के भीतरी क्षेत्रों में भी उद्योगों की स्थापना की जाए। प्रदेश में पर्यटन उद्योग भी अहम है। देश-विदेश के असंख्य पर्यटक यहां की आबोहवा में स्वास्थ्य लाभ लेने के लिए यहां आते हैं। इस कारण औद्योगिक विस्तार के समय यहां के पर्यावरण का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए। औद्योगिक घरानों को भी चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा जाए। इसके अलावा सरकार द्वारा तय नियम कि उद्योगों में 70 फीसद हिमाचल के लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जाए। राज्य के लोगों को भी चाहिए कि औद्योगिक जरूरत के अनुसार शिक्षा हासिल करें ताकि उन्हें आसानी से रोजगार के अवसर मिल सकें।

आर्य समाज के लिए आत्ममंथन का पड़ाव

विनोद बंसल

हीरक जयंती से पूर्व आर्य समाज को यह देखना होगा कि अपने लक्ष्यों में वह अभी तक कितना सफल हो पाया है

भारत के मनीषियों में स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम बहुत आदरपूर्वक लिया जाता है। उनके 195वें जन्मोत्सव के अवसर पर हमें यह देखना होगा कि अपने समाज को आगे ले जाने के लिए उन्होंने जो स्वप्न देखा था वह किस स्तर तक साकार हुआ है और यदि नहीं हुआ है तो उसे पूरा करने के लिए और क्या प्रयास करने होंगे। वर्ष प्रतिपदा के पावन दिवस पर 10 अप्रैल, सन 1875 को महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज ने अब तक देश के धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक व राष्ट्रीय विषयों पर अपनी गहरी पैठ बनाई है। इसके द्वारा अविद्या के अंधकार को दूर कर विद्या के प्रसार, अंधविश्वासों, आडंबरों, मिथ्याचरण, बाल विवाह, बेमेल विवाह, सामाजिक कुरीतियों, सामाजिक असमानता इत्यादि पर प्रहार करते हुए हिंदी, संस्कृत व देवनागरी के साथ गुरुकुलों का विकास, वेदों का सरलीकरण व सुलभीकरण, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा का प्रसार आदि कार्यों में वैश्विक स्तर पर प्रशंसनीय कार्य हुए हैं। योगदर्शन में वर्णित अष्टांग योग यथा यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि जिनसे मनुष्य ज्ञानवान होकर ईश्वर को प्राप्त कर सकता है, के प्रचार-प्रसार की दिशा में भरसक प्रयास किए हैं जिनके अपेक्षित परिणाम भी आए हैं। ये समाज और देश में बड़े परिवर्तनों के सूत्रधार बने हैं।

स्वामी श्रद्धानंद की प्रेरणा, संकल्प और संघर्ष के कारण आर्य समाज ने जो एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया वह था हिंदू शुद्धि सभा की स्थापना। इस शुद्धिकरण के अंतर्गत विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा तलवार के बल पर जबरन या छल-कपट से धर्मांतरित हुए हिंदुओं को अपनी मूल मुख्य राष्ट्रीय धारा यानी हिंदू धर्म में सहर्ष सम्मानजनक रूप से वापसी का कार्य किया जाता है। इस शुद्धि आंदोलन के फलस्वरूप लाखों मतांतरित हिंदुओं ने घर वापसी कर सुख का अनुभव किया। स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम तथा महाशय राजपाल आदि महान पुरुष तो इसी कारण इस्लामिक जिहादियों के कोप का भाजन बन हिंदू धर्म की रक्षा के लिए बलिदान भी हो गए।

महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज मात्र कुछ वर्षों बाद ही अपनी हीरक जयंती मनाएगा। इसमें लक्ष्य होगा यज्ञ, हवन, वेद, उपनिषद आदि सत्य ग्रंथों का पठन-पाठन, ईश्वर भक्ति, राष्ट्रभक्ति, मातृ-पितृ भक्ति, संस्कार, सदाचार, समर्पण व सेवा इत्यादि का भाव घर-घर और जन-जन में जगाकर स्वस्थ, सुखी व समृद्ध समाज जीवन का विस्तार करना। इस कड़ी में अंतिम लक्ष्य है 'कृण्वंतो विश्वमार्यम' अर्थात संपूर्ण विश्व को आर्य यानी श्रेष्ठ बनाना। यह समय इसका विश्लेषण करने का है बीते 144 वर्षों में हम महर्षि के सपनों को पूरा करने की दिशा में कितनी प्रगति कर पाए हैं। या जो अपूर्णता बचीं हैं उन्हें कैसे पूर्ण करें कि अगले छह वर्ष बाद आने वाली 150वीं जयंती तक हमारे लक्ष्य हमें हासिल हो जाएं। इसके लिए किसी और पर निर्भर होने या परिस्थितियों को दोष देने की अपेक्षा सभी आर्यजनों को स्वयं से कुछ प्रश्न ईमानदारी से अपने अंतर्मन की गहराइयों से पूछने पड़ेंगे। उन प्रश्नों का उत्तर भी स्वयं को ही खोजकर आत्मावलोकन करना है जिससे हम संगठन, समाज व राष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ बनाते हुए विश्व भर को आर्य बनाने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

इस दिशा में हमें कुछ ऐसे प्रश्न पूछने होंगे। जैसे लगभग सभी आर्य समाज मंदिरों में तो दैनिक यज्ञ व वेद-पाठ होते हैं, किंतु क्या सभी आर्य समाजियों के घरों में भी ऐसा होता है। आर्य समाजी तो नियमित यज्ञ-हवन-सत्संगों में जाते हैं, किंतु क्या हमारे स्वयं के परिजन, मित्र, पड़ोसी और रिश्तेदार भी इनमें सहभागी होते हैं? क्या हमने उनको साथ ले जाने के लिए कुछ सार्थक प्रयास किए हैं? अपने सत्संगों व प्रवचनों में सत्य विद्या के प्रसार हेतु हिंदू समाज में व्यापक रूप से प्रचलित आस्था के केंद्र मूर्ति पूजा का विरोध कर उन्हें स्वयं से काटने का प्रयत्न तो बहुत किया, किंतु क्या उन्हें प्रेम व आग्रहपूर्वक आमंत्रित कर उनके अंदर यज्ञ, हवन, वेद, उपनिषदों इत्यादि के सच्चे ज्ञान के प्रति जिज्ञासा, आकर्षण व निष्ठा पैदा करने का सार्थक प्रयास भी किया है? आर्य समाज के जो 10 नियम हैं, उनमें से हमें कितने याद हैं, कितने जीवन में धारण किए हैं और उनमें से कितने अन्य लोगों में भी प्रवर्तित करने का प्रयास किया है? जो लोग पूर्व में आर्य समाज से जुड़े थे या कभी हमारे कार्यक्रमों में सहभागी रहे, किंतु अभी निष्क्रिय हैं, क्या हम अभी भी उन लोगों के संपर्क में हैं? यदि नहीं, तो उन्हें अपनी मुख्य धारा में लाने के लिए क्या कोई सार्थक पहल कर रहे हैं?

इनके अलावा हमें कई और प्रश्नों पर मंथन करना होगा। मसलन हमें यह भी देखना होगा कि हमारी विविध गतिविधियों में समाज के कौन-कौन से वर्ग कितने सक्रिय हैं। इनमें बाल, युवा और वृद्धों के साथ ही लैंगिक पैमाने पर भी पड़ताल करनी होगी। इस बीच यह बात भी गांठ बांधनी होगी कि जब तक नई पौध नहीं लगाएंगे, एक समय के बाद फलों से वंचित रह जाएंगे। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हम अपनी इस मुहिम को यथासंभव समावेशी बनाकर कैसे अधिक से अधिक लोगों को इससे जोड़ सकते हैं। हमें यह भी देखना होगा कि सामाजिक कार्यों में हमने कितने नए लोगों को जोड़ा और कितने पुराने लोग हमसे बिछड़ते गए। इस बीच कितने युवा हमारे अभियान में शामिल हुए और हमने कितने बच्चों को संस्कारों से दीक्षित किया। क्या हम निरंतर रूप से ऐसे आकलन कर पा रहे हैं। गंभीरता के साथ इसका चिंतन करने के बाद ही हम आसानी से पता लगा सकते हैं कि हमारे अभियान की भविष्य में आखिर क्या नियति होगी?

यह आकलन केवल इन्हीं मापदंडों तक ही सीमित नहीं रह सकता। हमें यह भी देखना होगा कि अपने विविध कार्यक्रमों में कितने कार्यक्रम ज्ञान, कितने भक्ति, कितने शक्ति व कितने राष्ट्रधर्म को समर्पित करके आयोजित किए गए? कितने लोगों ने उनमें रुचि दिखाई और कितनों ने उन पर अमल किया? किसी आयोजन की समाप्ति के साथ ही हमारा दायित्व पूरा नहीं होता, बल्कि एक नई जिम्मेदारी शुरू होती है। ऐसे में देखना होगा कि आर्य समाज के कार्यक्रम को हमने कभी मंदिरों से बाहर निकालकर, अभावग्रस्त सेवा बस्तियों, पार्कों और सार्वजनिक स्थलों में करने का प्रयास कर नए कार्यकर्ताओं का सृजन भी किया अथवा नहीं? बदलते दौर में तकनीक ने हमें अपना दास बना लिया है और इसमें व्यक्तिगत संपर्क की कड़ी लगभग टूटती जा रही है। ऐसे में हमें इस कड़ी को और मजबूत बनाकर अपने अभियान को नया क्षितिज प्रदान करना होगा तभी हम अपनी हीरक जयंती हर्ष और उल्लास के साथ मना पाएंगे और अपने लक्ष्यों के करीब पहुंचेंगे।

response@jagran.com

ऊर्जा

प्रयास

जीवन में असफल होने के बाद आलोचनाएं सुनने और हार कर बैठने के बजाय अपनी क्षमता पर पुनः विश्वास करके कुछ कर गुजरने वालों के कई नाम इतिहास के पन्नों पर दर्ज हैं। ऐसा ही एक नाम थॉम्स एल्वा एडिसन का भी है। उनकी गिनती दुनिया के महान आविष्कारकों में की जाती है। उनके द्वारा 1878 में आविष्कृत बल्ब आज हमारी जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। लालटेन युग में रहने को विवश मानव समाज को बल्ब का उपहार देकर संपूर्ण विश्व में 'प्रकाश क्रांति' की मशाल जलाने वाले एडिसन के बारे में बहुत ही कम लोग जानते हैं कि बल्ब बनाने के क्रम में वह दस हजार बार असफल रहे थे।

अपनी इस असफलता के बारे में उन्होंने कहा था कि 'मैं कभी नाकाम नहीं हुआ, बल्कि मैंने दस हजार ऐसे रास्ते निकाले लिए, जो मेरे काम नहीं आ सके।' अपने संघर्ष के दिनों में उन्होंने अपने परिवार एवं समाज से काफी आलोचनाएं भी सुनीं, किंतु उनके मजबूत इरादों के सामने आलोचनाएं प्राणहीन साबित हुईं। निराशाजनक वातावरण के बीच रहते हुए भी हार मानने के बजाय एडिसन ने अपने हरेक प्रयास में पिछली गलतियों से सीख लेकर आवश्यक सुधार की प्रक्रिया जारी रखी। अंततः उनकी जीत हुई और तब दुनिया कृत्रिम प्रकाश देने वाली 'बल्ब' के बारे में जान पाई! महज 35 वर्ष की आयु में फ्रांस की गद्दी पर बैठने वाले नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था, 'मेरे लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है, ये और बात है कि मैंने उस कार्य को करने का प्रयास ही नहीं किया।'

दरअसल किसी काम के प्रति हमारा प्रयास ही सफलता या असफलता की आधारशिला रखता है। प्रयास अगर सही दिशा में हों तो परिणाम सकारात्मक आते हैं, अन्यथा बेमन से किया गया प्रयास निरर्थक एवं निराशाजनक परिणाम देता है। हमारा प्रयास ही हमें चुनौतियों से लड़ने के लिए तैयार करता है। प्रयास के दौरान मिलने वाली असफलता इस बात का सूचक होती है कि हमारे प्रयास में कुछ कमी रह गई है। ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी असफलताओं से सीखना और सुधार करना शुरू कर दिया है, वह आगे जीवन में कभी असफल नहीं होगा। हरिवंश राय बच्चन ठीक ही कहते हैं-असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, कमी को देखो और सुधार करो।

सुधीर कुमार

आतंक के गढ़ में घुसकर प्रहार

महेंद्र वेद

भारतीय वायुसेना ने यह संदेश दे दिया है कि उसमें यह क्षमता है कि अचूक ढंग से सर्जिकल एयर स्ट्राइक को अंजाम दे सके

भारत ने एक बार फिर पाकिस्तान की आतंकी हिमाकत पर तगड़ा पलटवार किया है। इसमें 300 से ज्यादा आतंकियों को मारने की बात कही जा रही है। इस आंकड़े को लेकर जरूर बहस हो सकती है, लेकिन यह महत्वपूर्ण नहीं है। जो संदेश देना जरूरी था, वह दिया जा चुका है। भारतीय वायुसेना की पश्चिमी कमान के कमांडिंग ऑफिसर रहे एयर मार्शल (रिटायर्ड) वीके भाटिया ने कहा कि भारतीय वायुसेना ने यह स्पष्ट संदेश भेज दिया है कि उसमें यह क्षमता है कि अचूक ढंग से सर्जिकल एयर स्ट्राइक को अंजाम दे सके। और यदि जरूरत हो तो वह आगे भी ऐसी और एयर स्ट्राइक्स को अंजाम देने के लिए तैयार है। भाटिया कहते हैं कि भारत को कई सालों से पीओके एवं खैबर-पख्तूनख्वा में स्थित चकोटी, बालाकोट और मुजफ्फराबाद आदि जगहों पर आतंकी शिविरों के बारे में जानकारी है।

एक सवाल और, भारतीय वायुसेना ने इस एयर स्ट्राइक के लिए मिराज-2000 को क्यों चुना? इसका जवाब यह है कि इस मकसद की पूर्ति के लिए भारतीय वायुसेना के पास मौजूद ये सर्वश्रेष्ठ विमान हैं, जो लेजर गाइडेड बम से हमले की क्षमता रखते हैं। उन्हें इस भूमिका के लिए 1980 के दशक में इंदिरा गांधी सरकार द्वारा खरीदा गया था। पिछले 35 वर्षों से इस्तेमाल में रहने के दौरान इन्हें लगातार अपग्रेड करते हुए आधुनिक उपकरणों और अस्त्रों से लैस किया जाता रहा है। आधुनिक दौर की लड़ाइयों में वायुसेना की निर्णायक भूमिका होती है। याद करें कि 1971 में भी जमीनी लड़ाई छिड़ने के बाद बांग्लादेश की मुक्ति की जंग तब शुरू हुई, जब पाकिस्तानी सेना ने 3 दिसंबर को अपने पहले लड़ाकू विमानों का दल लड़ाई में भेजा और जिसका भारतीय वायुसेना ने पूरी क्षमता से प्रतिकार किया। वर्ष 1965 की कहानी भी कुछ ऐसा ही थी। यह आधुनिक लड़ाइयों में वायुसेना की भूमिका की महत्ता को रेखांकित करता है।

इस वक्त दुबई में निर्वासन में रह रहे पाकिस्तान के पूर्व सैन्य शासक रिटायर्ड जनरल परवेज मुशर्रफ ने पिछले ही दिनों एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा था कि यदि पाकिस्तान एक परमाणु बम फेंकेगा तो भारत 20 परमाणु बम पटकते हुए उसे खत्म कर सकता है। लिहाजा पाकिस्तान की ओर से भारत के खिलाफ परमाणु युद्ध छेड़ने की आशंका तो नहीं लगती।

जहां तक भारत की बात है तो इस एयर स्ट्राइक के बाद देशभर में जश्न का माहौल है। हालांकि पिछली बार सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक के वक्त कुछ संदेह और आलोचना के सुर उठे थे, खासकर इसलिए क्योंकि पहली बार सार्वजनिक रूप से इसका जिक्र किया गया था, जबकि ऐसी कार्रवाइयों को गोपनीय रखा जाता है, लेकिन इस बार सरकार के आलोचक और उसके राजनीतिक विरोधी जो दो महीने बाद होने वाले आम चुनाव की तैयारियों में व्यस्त हैं, उन्होंने भी न सिर्फ इस हमले की बात को माना, बल्कि भारतीय वायुसेना के साहस को सलाम भी किया।

अंत में ऐसा लगता नहीं कि यह घटना आगे चलकर पाकिस्तान के साथ किसी बड़े टकराव का रूप ले सकती है। अगर ऐसा होता भी है तो हमारा राजनीतिक एवं सैन्य नेतृत्व उसे संभालने के लिहाज से पूर्ण सक्षम है।

(लेखक रक्षा मामलों के जानकार हैं)

मेलबाक्स

क्या अब भी सुधरेगा का पाक?

पाकिस्तान के मनोबल पर प्रहार शीर्षक से लिखे अपने लेख में ब्रिगेडियर (रि.) आरपी सिंह ने 26 फरवरी को भारतीय वायु सेना के मिराज-2000 लड़ाकू विमानों द्वारा पाकिस्तान के घर में जाकर आतंकी ठिकानों को नष्ट करना पाकिस्तान को सबक सिखाने वाला प्रयास बताया है। मेरा मानना है कि भारतीय वायुसेना की यह सर्जिकल स्ट्राइक पाकिस्तान का मनोबल तोड़ने वाली ही नहीं, बल्कि कश्मीर में डेरा डाले देशद्रोही और गद्दारों को भी एक कड़ा संदेश है। मोदी सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण ही यह संभव हो पाया है। सर्जिकल स्ट्राइक-2 करके भारतीय वायु सेना ने इस बात का अहसास अपने दुश्मनों को जरूर दिला दिया कि भारतीय सेना अपने दुश्मनों को करारा जबाव देने में माहिर है। हालांकि सर्जिकल स्ट्राइक-2 मोदी सरकार के लिए करवाना बहुत जरूरी हो गया था, क्योंकि नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनाव में पाकिस्तान को करारा जबाब देने और कश्मीर में धारा 370 हटाने की जो बाते की थी, वह उनके सत्ता में आने के बाद अप्रभावी होती जा रही थी और विपक्ष उन्हें घेर रहा था। पुलवामा कांड के बाद प्रधानमंत्री मोदी पर हमले ओर तेज हो गए थे। सर्जिकल स्ट्राइक-2 ने उन सबकी जुबान बंद कर दी है जो कल तक मोदी सरकार की आलोचना कर रहे थे। अंत में यह भी कहना उचित होगा कि इस कार्रवाई से पाक बौखला गया होगा। वह कोई भी नीच हरकत कर सकता है, इसके लिए भारत को अपना सुरक्षाचक्र और मजबूत करना होगा?

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

कोरी धमकी

भारतीय वायु सेना द्वारा बालाकोट में हमला कर आतंकी प्रशिक्षण शिविर को नष्ट करने के बाद पाक युद्ध जैसे हालात पैदा कर रहा है। आतंकवाद के सफाए के लिए भारतीय कार्रवाई के बाद पाकिस्तानी नेता एवं अधिकारी भारत के खिलाफ जहर उगल रहे हैं। भारत को जंग की धमकी दे रही हैं, लेकिन पाक को मालूम है कि भारत से सीधे युद्ध में जीत पाना नामुमकिन है। एटमी ताकत की धमकी और युद्ध से भारत की जनता और सरकार डरने वाली नहीं है। पाक धरती पर आतंकवादियों के समूह को मिट्टी में मिला देने वाली भारतीय वायु सेना दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेनाओं में से एक है। भारत किसी भी देश के खिलाफ भड़काऊ और सैन्य कारवाई के पक्ष में नहीं है, लेकिन और जवाबी कारवाई के रूप में दुश्मनों को धूल चटाने पर मजबूर कर सकता है। भारत पाक के बीच युद्ध जैसे हालात के लिए पाक सेना जिम्मेदार है, जो आतंकवाद को पालपोस रही है।

skcbe9@gmail.com

नशे का सेवन घातक

मादक पदार्थों का सेवन एक बड़ी चुनौती बन गया है। बड़ी संख्या में युवा इसकी चपेट में हैं। ये पदार्थ कुछ समय के लिए नशा देते हैं। नशा खत्म होने पर व्यक्ति फिर से उसे लेना चाहता है। कुछ ही दिनों में उसे इन पदार्थों की लत लग जाती है। उसके बाद लोग चाहकर भी इसे छोड़ नहीं पाते हैं। आज देश के कई राज्यों में इन मादक पदार्थों को चोरी-छिपे बेचा जा रहा है। वैसे तो भारत के कुछ राज्यों में सरकार की तरफ से पाबंदी लगा दी गई है, परंतु इससे कुछ खास असर दिखाई नहीं दे रहा है।

निखिल कुमार झा, आंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विवि

पाकिस्तान को मिला सबक

भारतीय वायु सेना की कार्रवाई सराहनीय है। इससे पाकिस्तान को सबक मिल गया होगा। उसे अब समझ गया होगा कि वह भारत को डरा नहीं सकता, अपितु उसे अब ईंट का जवाब पत्थर से मिलेगा। भारत को चाहिए कि वह कार्रवाई के लिए रुके नहीं, अपितु अन्य आतंकी शिविरों पर और हमला कर उन्हें नष्ट कर दे। इससे आतंकियों को मिल रहा समर्थन भी बंद हो जाएगा।

खत्म हो आतंक

पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए 40 वीरों का बदला सेना ने पाक के आतंकी अड्डों और 300 आतंकियों को खत्म कर ले लिया। जब तक पाकिस्तान से आतंकियों का समूल नाश नहीं हो जाता तब तक आगे भी इसी तरह की कार्रवाई चलती रहे, ताकि फिर कोई आतंकी घटना कहीं भी न होने पाए। संसार को दानव नहीं मानव की जरूरत है, ताकि अमन, चैन और शांति सा स्वर्ग सारे जहां में बना रहे।

mahesh_nenava@yahoo.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।